

काँपी संस्कृति

मीनू पालीवाल

कक्षा 5 की एक बच्ची अपनी काँपी में कुछ लिख रही थी।

मैं: क्या तुम पढ़ना जानती हो?

बच्ची: नहीं।

मैं: तो फिर तुम क्यों लिख रही हो?

बच्ची: मैडम ने लिखने के लिए कहा है।

मैं: पर क्यों?

बच्ची: मेरा लेखन अच्छा हो जाएगा, इसलिए।

स्कूलों में, आम तौर पर बच्चे काँपियों में कुछ-न-कुछ लिखते हुए नज़र आते हैं। कई बार तो वे बच्चे भी जो पढ़ना नहीं जानते। कक्षा 1 और 2 के बच्चों की काँपियाँ क-ख-ग, क-का-कि, a-b-c, तथा 1 से 100 तक की गिनती से भरी हुई होती हैं। कक्षा 3 से 5 में, बच्चे अक्सर किताब से किसी पाठ को देखकर अपनी-अपनी काँपियों में उतार रहे होते हैं; या ढेर सारे जोड़, घटा, गुणा और भाग के सवाल मानक एल्गोरिद्म से हल कर रहे होते हैं।

जब किसी स्कूल में विज़िट के लिए जाती हूँ, तो कई मर्तबा मेरे कहे बिना ही कक्षा 1 और 2 के बच्चे अपनी-अपनी काँपी चेक करवाने मेरे

पास आ जाते हैं। उन काँपियों में उन्होंने वर्णमाला या गिनती लिखी होती है, और वे चाहते हैं कि मैं उसे चेक कर दूँ। यह सब देखकर मैं अक्सर यह सोचती हूँ - क्या इस तरह अपनी काँपी में यह सब लिखना बच्चों को रोचक लगता होगा? यकीनन नहीं, क्योंकि इसमें बच्चों के लिए कोई अर्थ नहीं है। फिर वे क्यों किसी नए व्यक्ति के आने पर उसे वर्णमाला या गिनती लिखकर दिखाते हैं? इसका एक कारण शायद यह हो सकता है कि अमूमन जो बच्चे यह काम कर लेते हैं, उन्हें शिक्षक शाबाशी देते हैं, और फिर धीरे-धीरे बच्चे यह समझने लगते हैं कि स्कूल में यही काम करना होता है। धीरे-धीरे स्कूल और वास्तविक दुनिया के बीच की दूरी बढ़ती जाती है।

काँपी पूरी करने की बाध्यता क्यों?

शायद यह बाध्यता शिक्षकों के अपने स्कूली दिनों के अनुभवों तथा अन्य शिक्षकों को भी ऐसा करता देखने के कारण लगाई जाती होगी। इतना ही नहीं, यह संस्कृति पूरे शिक्षा विभाग में व्याप्त है। स्कूल में बाहरी अधिकारियों के भ्रमण के दौरान भी यही - काँपी कम्प्लीट है या नहीं -

चेक किया जाता है। शायद इसलिए क्योंकि यह चेक व क्रॉस-चेक करना आसान है। शिक्षकों के नज़रिए से - “बच्चे लिख रहे हैं तो कुछ सीख ही रहे हैं,” जैसे कि सुन्दर और शुद्ध लेखन, विषयवस्तु पठन, ध्यान केन्द्रित करना आदि। मध्य प्रदेश के कई स्कूलों में, साल में एक बार, बाहर से आए शिक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा (कॉपी) निरीक्षण करवाया जाता है। इसलिए कार्यपुस्तिका और कॉपी भरी होना बेहद ज़रूरी होता है, चाहे असल में बच्चा कुछ जानता हो या नहीं। कुछ शिक्षकों ने इस वजह से कक्षा में बच्चों की अनुपस्थिति बढ़ने की बात भी साझा की है।

आखिर क्यों?

कॉपी पूरी करना इतना ज़्यादा ज़रूरी होता है कि जिस उद्देश्य के लिए किताबें व कार्यपुस्तिकाएँ बनाई गई हैं, वही पीछे रह जाता है। एक बच्ची, किसी अन्य बच्ची की कार्यपुस्तिका से देखकर अपनी कार्यपुस्तिका में लिख रही थी। प्रश्न कुछ इस तरह के थे - ‘उन जानवरों के नाम लिखो जिनके शरीर पर बाल नहीं होते’। तथा, ‘ऐसे जानवरों के नाम लिखो जिनके कान दिखाई नहीं देते’। जब मैंने कॉपी करके लिखने वाली बच्ची से किताब में लिखे यही प्रश्न पूछे, तो उसने उनके उत्तर ठीक-ठीक बताए। मुझे लगा कि हो

सकता है कि इस बच्ची को पढ़ना या लिखना नहीं आता हो, इसीलिए शायद वह दूसरी बच्ची की किताब से देखकर लिख रही है। मैंने उससे पूछा कि क्या वह पढ़ना-लिखना जानती है। उसने बताया कि उसे पढ़ना-लिखना आता है। अब सोचिए, जिस बच्ची को पढ़ना-लिखना आता है, और प्रश्न का उत्तर भी पता है, वह भी किसी और की किताब से देखकर अपनी कॉपी भर रही है!

रटना भी कॉपी संस्कृति

कॉपी भर लेने के बाद उसमें लिखा याद करना (या, रटना) भी कॉपी संस्कृति का हिस्सा है। एक बार एक बच्ची मैडम को अपना सारा याद किया हुआ सुना रही थी। पाठ के उत्तर तो छोड़िए, उसने तो प्रश्न भी याद कर लिए थे! वह बच्ची इतनी रफ्तार से सब याद किया हुआ सुना रही थी कि वह क्या कह रही थी, यह समझने में भी मुश्किल हो रही थी। पाठ भगत सिंह के बारे में था। जब उसने याद किए तीन-चार प्रश्नों के उत्तर दे दिए, तो मैं उस बच्ची के पास गई और पूछा, “भगत सिंह को फाँसी क्यों दी गई थी?” पाठ याद होने के बावजूद बच्ची इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाई।

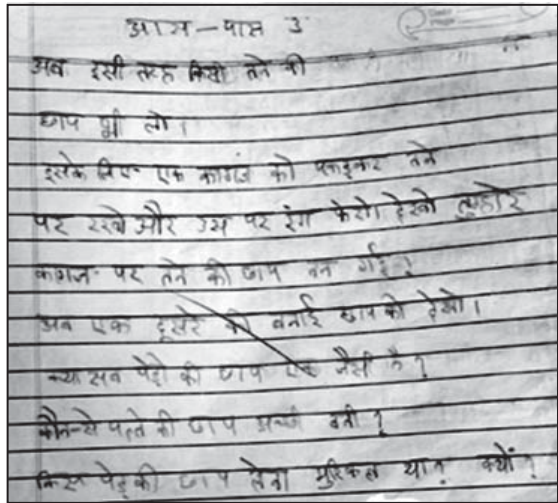
कई बच्चे स्कूल में मीटर से सेंटीमीटर और किलोमीटर में संख्याओं को परिवर्तित कर लेते हैं, लेकिन यदि उनसे यह पूछा जाए कि

आपकी ऊँचाई कितने मीटर है, या आप जिस कमरे में बैठे हैं, उसकी लम्बाई-चौड़ाई कितनी है तो उनमें से कई नहीं बता पाते। बचपन में माँ ने मुझे दो मीटर कपड़ा लाने के लिए कहा। मैं भी किलोमीटर, सेंटीमीटर, मीटर में संख्या बदलने का काम कर लेती थी, परन्तु जब माँ ने कपड़ा लाने को कहा तो मुझे समझ नहीं आया कि दो मीटर कपड़ा भौतिक रूप से कितना लम्बा होगा। यह अनुभव इस बात का सबूत है कि स्कूल और स्कूल के बाहर की दुनिया के बीच में दूरी है, और कक्षा बढ़ने के साथ-साथ यह खाई बढ़ती चली जाती है।

कॉपियों में क्या लिखा?

• पर्यावरण की कॉपी के कुछ पन्ने

एनसीईआरटी की मौजूदा किताबों में बच्चों के लिए करके देखने और किताब में लिखी बातों को अपनी जिन्दगी से जोड़ने के बहुत-से मौके हैं। मगर ये सब मौके उन्हीं बातों को कॉपी में उतारने तक ही सीमित रह जाते हैं, जैसा चित्र-1 में देखा जा सकता है। किताब में सुझाई गई गतिविधि के



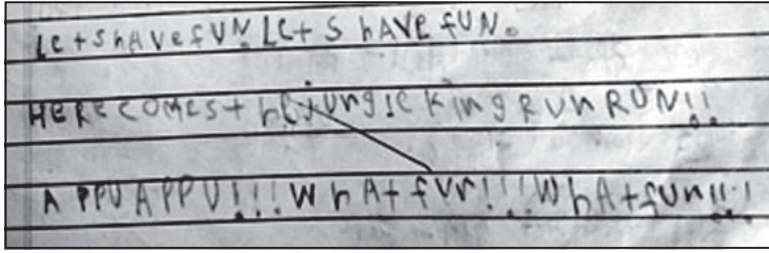
अनुसार, बच्चों को पेड़ों की छाल पर पेपर रखकर पेंसिल से उनकी छाप बनानी हैं, और इस बात पर विचार करना है कि किस पेड़ की छाप कैसी बनी व क्यों।

• अंग्रेज़ी की कॉपी से

जैसा कि चित्र-2 में देखा जा सकता है, शब्दों के बीच जगह नहीं छोड़ी गई है। कहीं कैपिटल तो कहीं स्मॉल अल्फाबेट लिखे गए हैं। यह काम करने में बच्चे का समय और ऊर्जा लग रहे हैं मगर वह सीख क्या रहा है? क्या वह यह नहीं सीख रहा कि स्कूल में जो काम करते हैं, उसका बाहर की दुनिया से कोई वास्ता नहीं होता।

• गणित के पन्ने

चित्र-3 में नज़र आ रहा यह



चित्र-2

अभ्यास, दरअसल, क्षेत्रफल की अवधारणा सिखाने वाले हिस्से का है। इसमें बच्चों को 1 सेमी बाय 1 सेमी के डिब्बे गिनकर किसी चीज़ या आकार का क्षेत्रफल निकालना होता है। इसके लिए किताब के एक पन्ने पर 1 वर्ग सेमी वाले डिब्बों की ग्रिड दी गई है, जिस पर बच्चों को अपनी हथेली को ट्रेस करके स्केच बनाना है, और फिर उसका क्षेत्रफल पता करना है। साथ में, यह भी पता करना है कि कक्षा में किसकी हथेली सबसे बड़ी है और किसकी सबसे छोटी। परन्तु चित्र-3 को देखकर आप

अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि बच्चे ने अपने हाथ को ट्रेस करके स्केच नहीं बनाया है, बल्कि किसी हाथ का 'चित्र' बनाने की कोशिश की है। इतना ही नहीं, यह गतिविधि सीधे किताब के पन्ने पर ही की जानी थी, कॉपी में डिब्बे बनाने की ज़रूरत ही नहीं थी। और फिर इसके बाद (देखें चित्र-4), अपनी और अपनी सहेली की हथेली के क्षेत्रफल सम्भवतः किसी गाइड से देखकर लिखे हैं। हथेलियों के ये क्षेत्रफल आम तौर पर 4 से 6 साल के बच्चों के ही हो सकते हैं, कक्षा-5 के बच्चों की हथेलियों का क्षेत्रफल अमूमन इतना कम नहीं होता। बाद में, उसी कक्षा में यह गतिविधि करवाई जाने के दौरान बच्चों की हथेलियों के क्षेत्रफल 60 से 80 वर्ग सेमी के बीच प्राप्त हुए।

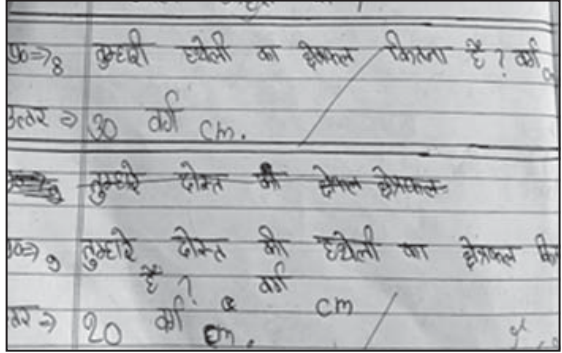
कॉपी में लेखन गलत?

मैं स्कूलों में कॉपी में किए गए हर काम को गलत नहीं कह रही हूँ, बल्कि कॉपी में



चित्र-3

किए गए काम की 'सार्थकता' की तरफ ध्यान दिलाना चाहती हैं। शिक्षक कक्षा में कुछ समझाते हैं तो उसे याद रखने के लिए या उस बात को दोबारा पढ़ने के लिए यदि बच्चे कॉपी में लेखन का



चित्र-4

काम करते हैं तो यह सार्थक लगता है। लेखन जरूरी है। कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए, लेखन द्वारा हाथ की मांसपेशियों का सन्तुलन बेहतर करने में भी मदद मिलती है। लेखन के दौरान विषयवस्तु को ध्यान से देखने का समय भी मिलता है; परन्तु यह काम कितना सचेत होकर किया जा रहा है, यह महत्वपूर्ण है। इसके लिए, शिक्षकों के काम के उदाहरणों के साथ, कुछ सुझाव प्रस्तावित हैं।

विषयवार कुछ सुझाव

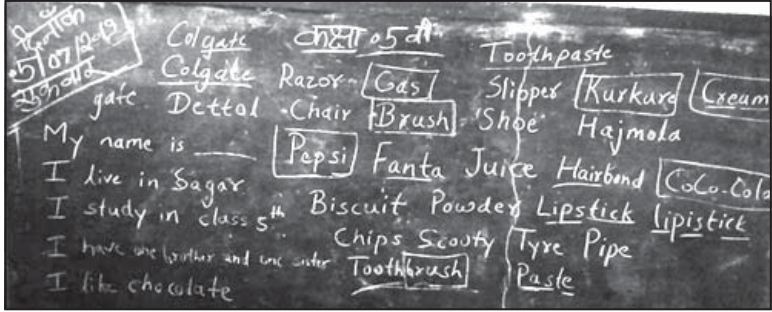
• हिन्दी

कक्षा 1 और 2 में, शिक्षक यदि ब्लैकबोर्ड पर किसी पाठ के प्रश्नों के उत्तर लिखते हैं, तो बच्चे उन्हें बोर्ड से देखकर कॉपी में लिखें, परन्तु बच्चों को यह पता होना चाहिए कि वे क्या लिख रहे हैं। इसके लिए लेखन से पहले, बच्चों के साथ पाठ के प्रश्नों पर चर्चा की जाए, और बोर्ड पर उत्तर लिखने के बाद शिक्षक

द्वारा थोड़ा समय लेते हुए उन्हें पढ़ा जाए। वहीं कक्षा 4 और 5 में, हम यह उम्मीद करें कि प्रश्नों पर चर्चा के बाद बच्चे खुद से ही उत्तर लिखें, और बच्चों की कॉपी देखने के बाद शिक्षक कुछ आम गलतियों पर बोर्ड पर काम करें।

कक्षा अनुभव - मैडम कक्षा-3 में 'मैं हूँ नीम' पाठ पढ़ा रही थीं। शुरुआत में उन्होंने कुछ सवालों की मदद से पाठ का सन्दर्भ स्थापित किया, जैसे - नीम का पेड़ देखा है क्या? कहाँ देखा है? क्या काम आता है? वगैरह। बच्चे कम ही बोले परन्तु जवाब जरूर दिए। इसके बाद मैडम ने बच्चों से पाठ पढ़ने के लिए कहा। सारे बच्चे धीरे-धीरे - थोड़ा जोड़कर, थोड़ा बिना जोड़े - पढ़ रहे थे।

उन्होंने पाठ पढ़ाने के दौरान भी कई प्रश्न पूछे, जिनके जवाब बच्चों के परिवेश में मौजूद हैं और बच्चों ने इन प्रश्नों के उत्तर भी दिए।



1. नीम के अलावा और कौन-कौन-से पेड़ों में औषधीय गुण होते हैं?
2. नीम की पत्तियों को कपड़ों और अनाज में सुखाकर ही क्यों रखते हैं?
3. नीम के किस भाग से तेल निकलता होगा?
4. अन्य कौन-कौन-सी चीजें खाने में कड़वी होती हैं?

इस प्रक्रिया के बाद ही कॉपी में लेखन का काम किया गया।

• अंग्रेज़ी

बच्चे अपने आसपास से भाषाई ज्ञान व शब्द अर्जन करते रहते हैं। बहुत-से शब्द, जो असल में अंग्रेज़ी के हैं, अंग्रेज़ी नहीं जानने वाले बच्चे भी बड़े ही आराम-से इस्तेमाल करते दिखाई देते हैं। जैसे कक्षा-1 के एक बच्चे ने कहा, “मैंने रुमाल फोल्ड कर लिया।” या “हमें खाना शेरर करना चाहिए” आदि। वैसे तो बच्चे बहुत-से

अंग्रेज़ी शब्द, जैसे पिकनिक, हॉस्पिटल, होटल आदि बोलते ही हैं, परन्तु कक्षा-1 के बच्चों से ‘फोल्ड’ और ‘शेरर’ शब्द सुनकर मुझे काफी आश्चर्य हुआ।

कक्षा अनुभव - शिक्षा का एक सिद्धान्त कहता है कि बच्चों को कुछ नया सिखाने के लिए उनके पूर्वज्ञान का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। बच्चों की बोलचाल में आने वाले अंग्रेज़ी के शब्दों का इस्तेमाल ‘डीकोडिंग’¹ सिखाने के लिए किया जाना चाहिए। ऐसी ही एक छोटी कोशिश कक्षा-4 के बच्चों के साथ मैंने की (देखें चित्र-5)। चूँकि बच्चे पहले से अंग्रेज़ी के इन शब्दों के मौखिक रूप से परिचित थे, इसलिए ब्लैकबोर्ड पर इनके लिखित रूप को पहचानने में और फिर उन्हें तोड़कर डीकोडिंग सीखने में उन्हें मदद मिल रही थी, जैसे Kur/ kure, Fan/ta, Pep/si.

यदि अब बच्चे इन शब्दों को

¹ डीकोडिंग पढ़ने का एक कौशल है जिसमें लिखित शब्दों के हिज्जे करके उनका उच्चारण किया जाता है।

अपनी कॉपी में लिखते हैं, तो यह एक सार्थक गतिविधि होगी।

• गणित

इसी तरह, गणित में यदि बोर्ड पर काम हो रहा है तो इबारती प्रश्नों का ज्यादा इस्तेमाल हो। मसलन, शिक्षक बोर्ड पर कोई अपूर्ण संक्रिया लिख दें और बच्चे उसके आधार पर सवाल बनाएँ, जिन्हें शिक्षक बोर्ड पर लिख दें। जैसे: $8 - 5 = \underline{\quad}$

इसके लिए बच्चों से प्रश्न बनाने के लिए कहें। मेरे कक्षा अनुभव के दौरान एक बच्चे द्वारा बनाया गया सवाल -

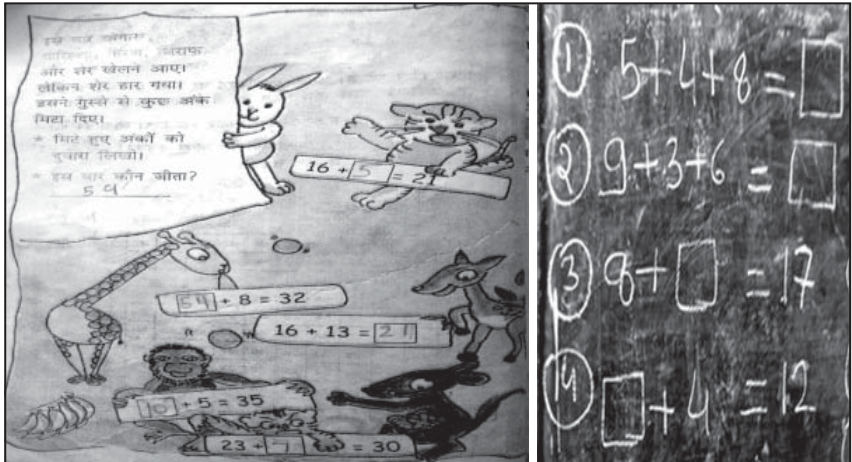
‘एक पेड़ पर 8 चिड़ियाँ बैठी थीं। 5 चिड़ियाँ उड़कर चली गईं, तो अब पेड़ पर कितनी चिड़ियाँ बचीं?’

इसी तरह गुणा, भाग व जोड़ के

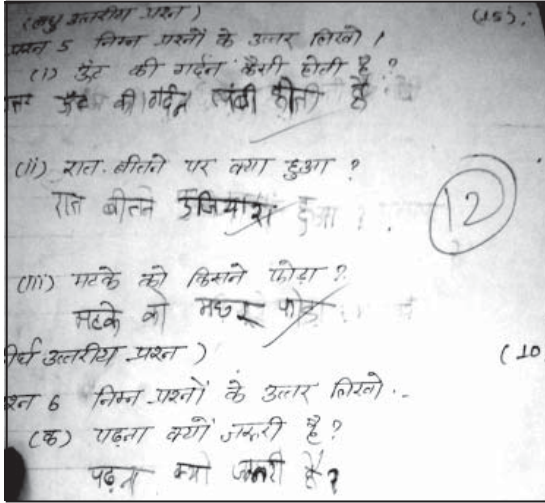
लिए भी सवाल बनाने और बनवाने की गतिविधि की जा सकती है, जिसे बोर्ड से देखकर कक्षा के बच्चे कॉपी में उतार सकते हैं। इस पर काम होने के बाद, ज़रूरत के अनुसार अभ्यास के लिए कुछ संक्रियाएँ हल करने के लिए दी जा सकती हैं।

अभ्यास में विविधता होनी चाहिए, जिसे हम किताबों में भी तलाश सकते हैं, और मुझे खुशी है कि मैंने एक स्कूल में यह होते हुए देखा।

कक्षा अनुभव - कई शिक्षक अपनी कक्षा में सीखने के अलग-अलग आयामों को जगह देते हैं। चित्र-6 में आप देख सकते हैं कि किस तरह शिक्षिका ने किताब में दिए गए उदाहरण के आधार पर बच्चों को अभ्यास करवाने के लिए सवाल बनाए हैं।



चित्र-6



चित्र-7

तरह-तरह के सवालों से आप यह भी जान सकते हैं कि बच्चा कितनी अवधारणा समझ पाया है, जैसे चित्र-6 में बच्चा ये सवाल हल करना सीखा गया है: $16 + 13 = \underline{\quad}$, $23 + \underline{\quad} = 30$. वह बड़ी संख्या से आगे गिनती गिनकर जोड़ की प्रक्रिया कर रहा है परन्तु जोड़ के बाकी आयाम उसे सीखने हैं। इस तरह से सवाल पर चर्चा करने से बच्चे जोड़ करने के अलग-अलग तरीके ईजाद कर सकते हैं जैसे 10 के समूह में जोड़ना

परन्तु जब यह पूछा जाता है कि पढ़ना क्यों जरूरी है तो उत्तर के लिए दी गई खाली जगह में वही प्रश्न फिर से लिख देता है। हम इन्सान काफी तार्किक होते हैं। किसी भी काम को करने के लिए हमें कारण चाहिए होता है, परन्तु हम बच्चों को कोई तार्किक कारण नहीं देते कि कोई काम उन्हें क्यों करना है। कक्षा-2 के उस बच्चे का यह उत्तर हमें यही सोचने का अवसर दे रहा है।

$24 + 35 = 20 + 30$
 $+ 4 + 5 = 59$,
 संख्या को हिस्सों में तोड़कर जोड़ना जैसे
 $7 + 7 = 7 + 3 + 4$
 $= 10 + 4$ आदि।

सभी विषयों में, शिक्षा के उद्देश्यों के अनुसार शिक्षण करने में 'कॉपी संस्कृति' काफी बड़ी अड़चन है। कक्षा-2 का एक बच्चा विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दे देता है (देखें चित्र-7),

मीनू पालीवाल: अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, सागर, म.प्र. में 2017 से 2022 तक काम किया। इससे पहले वे छह वर्ष तक आईसीआईसीआई बैंक में कार्यरत रहीं। मन में आने वाले सवालों के जवाब की तलाश में वे शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ी। प्राथमिक कक्षा के बच्चों के साथ काम करने में विशेष रुचि।

सभी फोटो: मीनू पालीवाल।